शोध मंथन Vol. XIII No.III July-Sept. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

उत्तराखण्ड़ के कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल में पलायन का आर्थिक स्तर पर प्रभाव

प्राप्तिः 21.07.2022
स्वीकृतः 16.09.2022

60

डा० विनय चंद्र
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
एम० बी० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हल्द्वानी, नैनीताल
ईमेलः *poojapokhariya95@gmail.com*

पुष्पा पोखरिया
शोधार्थी, वाणिज्य विभाग
एम० बी० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हल्द्वानी, नैनीताल
ईमेलः *vjntl123@gmail.com*

सारांश

एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरण की प्रवृति को पलायन का स्वरुप माना जाता है। मानव मौलिक संसाधनो की खोज करता हुआ पलायन करता है। और वहां पर जाकर रुकता है जहां उसे उसके मूलभूत सुविधाएं प्राप्त होती हैं। आज भी उत्तराखंड राज्य के अधिकतर लोग ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करते हैं लेकिन अब यह एक गहन चिन्तन का विषय है कि राज्य के ग्रामीण क्षेत्र अब धीरे–धीरे खाली होने के कगार में है कई ऐसे ग्रामीण क्षेत्र जहां भूमि बंजर, घर खंड़र बनकर रह गए है ऐसी स्थिति चिंता का विषय तो पैदा करती ही है साथ ही शहरों के लिए भी यह हालात अच्छे नहीं है ग्रामीण जंनसंख्या के कारण शहर में भी आबादी का घनत्वदिन–ब–दिन बढ़ताजा रहा है। यह अध्ययन का मुख्य उददेश्य उत्तराखण्ड़ राज्य के कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल में पलायन का आर्थिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना है। तथा अध्ययन के उददेश्यों को पूरा करने के लिए प्रश्नावली के माध्यम से उत्तराखण्ड राज्य के समस्त 13 जिलों से पलायन कर चुके 800 लोगों से आंकड़े संकलित किए गए हैं। और अध्ययन को तैयार करने के लिए विभिन्न सॉफटवेयर व उपकरणों का प्रयोग किया गया है तथा निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल के अधिकतर लोग गांव में रोजगार की कमी के कारण पलायन कर रहे हैं पलायन करने के उपरान्त दोनों ही मण्ड़ल के पलायनकर्ताओं को सकारात्मक स्थिति प्रभावित हुई है। अर्थात लोग पलायन के कारण रोजगार पाने में सफल हुए हैं।

मुख्य बिन्दु

पलायन, रोजगार, पलायनकर्ता, उत्तराखण्ड।

प्रस्तावना

उत्तराखंड राज्य भारत का 27वां राज्य है जो 28 डिग्री 43 से 31 डिग्री 27 उत्तरी अक्षांशों तथा 77 डिग्री 34 से 81 डिग्री 02 पूर्वी देशांतर तक फैला है इसका संपूर्ण क्षेत्रफल 53,483 वर्ग किलो मीटर है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 1.69 प्रतिशत है और क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का 18 वांराज्य है उत्तराखंड राज्य भारत के भौगोलिक विस्तार का 1.63 प्रतिशत है और देश की आबादी का 1 प्रतिशत से कम है।

पलायन के दर्द से उत्तराखंड राज्य भी दूर नहीं है उत्तराखंड राज्य के गांव के घरों में लगे ताले वह दूर–दूर तक फैला सन्नाटा खंडहर होते घर (कुमाऊनी भाषा में बाखली) बंजर कृषिभूमि से पता चलता है कि पलायन की समस्या गांव को दिन प्रतिदिन वीरान कर रही है उत्तराखंड में गांव का सन्नाटा आज का विषय नहीं, वर्षो की उपेक्षा का दंश झेल रहे उत्तराखंड वासियों की यह मजबूरी है। 2017 में प्रदेश के अखबार मैं छपे लेख में बताया गया है कि गढ़वाल मंडल के पौड़ी जिले में कल्जीखाल विकास खंड के अंतर्गत आने वाले बनूली गांव में एक दशक से 66 वर्षीय पूर्व सैनिक श्याम प्रसाद अकेले रह रहे थे और अब वह भी खराब स्वास्थ्य के चलते कोटद्वार पलायन कर चुके हैं।

उत्तराखंड़ में लगभग 80 प्रतिशत पहाड़ी क्षेत्र हैं। तथा 65 प्रतिशत क्षेत्र में जंगल है। तो 35 प्रतिशत से ही रिहायशी और वाणिज्य क्षेत्र उत्तराखण्ड़ के मैदानी इलाकों में है। उत्तराखंड के पहाड़ी जिलों में रिहयशी व वाणिज्यक क्षेत्र व गतिविधि कम होना ही पलायन का कारण है। उत्तराखंड का पहाड़ी राज्य उत्तरकाशी में जनसंख्यां घनत्व मात्र 41 है तथा हरिद्वार राज्य में जनसंख्या घनत्व 801 है। तो साधारणतः यह प्रदर्शित होता है उत्तरकाशी के लोग अपने स्व विकास व सुविधाओं को पाने के उददेश्य से अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र मे पलायन कर जाते हैं।

उत्तराखंड राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन संपूर्ण राज्य की स्थिति में प्रभाव डालता है इसके अनेक दुष्परिणाम भी हैं और लाभ भी हैं। राज्य से पलायन का रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क या आधारभूत संरचनाओं के कारणों से ही पलायन कारण नहीं है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन, ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करने के लिए राज्य सरकार द्वारा लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर विस्थापन (पलायन) कराया जाता है व अनेकों बार मौसम में परिवर्तन के कारण भी ग्रामीण लोग स्थान परिवर्तित कर जाते है, आपदा, भूकटाव, आदि भी पलायन के कारण हैं।

माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, बेरोजगारी, स्वार्थ सुख सुविधाएं, निजी सुरक्षा व अनेक कारणों से पलायन को ग्रामीण क्षेत्रों से होने का कारण माना जाता रहा है। जिसके कारण राज्य के अनेकों गांव भूतहा गांव में तब्दील हो गऐ हैं, और होने के कगार में हैं। दैनिक लोंमें 700 गांव वीरान हो गए। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में भुतहा गांवों (घोस्ट विलेज) यानी वीरान हो चुके गांवों की संख्यां 968 हो गई है।

साहित्य की समीक्षा

डॉ चौधरी सयंतनी रॉय और सुश्री जोर्डर सुरंजना (2020) प्रवासियों की बदकिस्मती और घर लौटने का उनका संघर्ष कई दिनों से मीडिया का मुख्य आकर्षण बना हुआ है। दर्दनाक अनुभव के कारण प्रवासी भविष्य में शहरों में वापस नहीं आना चाहते हैं। वे अब अपनी जमीन पर लौटने के लिए उत्सुक हैं और वहां कम से कम कमाए जा सकने वाले न्यूनतम पर टिके रहते हैं। एन एस एस ओ और जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी शहरों में महत्वपूर्ण प्रवासन हुआ है; इनमें से अधिकांश अंतर्राज्यीय ग्रामीण–शहरी प्रवास प्रकृति के हैं। लेकिन जनगणना के आंकड़े अल्पकालिक सर्कुलर प्रवासियों पर विचार नहीं करते हैं, जो कुल प्रवासी कार्यबल का एक बड़ा प्रतिशत है। 2007–08 में एन एस एस ओ द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 1.258 मिलियन अल्पावधि प्रवासी श्रमिक निवास कर रहे थे।

डोलिंस्का ए, जोल्ज़ीआर, पॉस्कर्टरोकिताडी. (2020). उद्देश्यः इस लेख का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि शिक्षा प्राप्त करने के लिए युवा आंतरिक प्रवास, जैसा कि आमतौर पर स्वीकार किया जाता है, अस्थायी नहीं है, लेकिन अंतिम इरादे में स्थायी है। डिजाइन/पद्धति/दृष्टिकोणः

सर्वेक्षण दो अलग–अलग क्षेत्रों में किया गयाः एक मजबूत (बड़े) क्षेत्रीय केंद्र के साथ और दूसरा कमजोर (छोटे) केंद्र के साथ। उन क्षेत्रों में विभिन्न आकार के माध्यमिक शिक्षा केंद्रों का चयन किया गया था। सामान्य माध्यमिक विद्यालयों से स्नातक होने वाले 2380 युवाओं के बीच एक सभागार सर्वेक्षण किया गया था। अध्ययन का आधार एक सर्वेक्षण था जिसमें कई प्रश्न थे और पृष्ठभूमि कानूनी डेटा से संबंधित पांच विशेषताओं का निर्धारण किया गया था। निष्कर्षः शिक्षा का पलायन "अध्ययन के लिए" एक बड़े शैक्षणिक केंद्र के रूप में महानगरीय शहर को संबोधित अंतिम प्रवास की शुरुआत बन जाता है। शोध के परिणामों ने यह भी साबित किया कि बड़े क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा छोटे क्षेत्रों के केंद्रों को निकालने की प्रक्रिया से क्षेत्रों, विशेष रूप से उनकी राजधानियों के विकास में अंतर गहराता है। व्यावहारिक निहितार्थः विश्लेषण के परिणामों का उपयोग एक उपयुक्त विकास नीति को आकार देने में किया जा सकता है। वे देश के क्षेत्रीय विभाजन की वास्तविक प्रक्रियाओं के लिए छोटी क्षेत्रीय राजधानियों या एक अलग दृष्टिकोण से देखने के लिए आनुपातिक समर्थन से अधिक की आवश्यकता का संकेत दे सकते हैं। मौलिकता/मूल्यः शोध के परिणाम प्रवास और स्थानीय और क्षेत्रीय विकास के संबंध में सैद्धांतिक मॉडल के निर्माण में योगदान कर सकते हैं।

अलीबसरत एमडी (2020). रेडीमेड गारमेंट उद्योग बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था का दिल है। उद्योग लगभग 4.2 मिलियन लोगों को रोजगार दे रहा है, जो औद्योगिक रोजगार में सबसे अधिक है। इस क्षेत्र में श्रमिकों का पलायन एक सामान्य घटना है। बार–बार श्रम प्रवास कुल परिधान उत्पादन को प्रभावित करता है और कम करता है गुणवत्ता सहित उत्पादन। इस श्रम प्रवास के पीछे कुछ कारण हैं जैसे अच्छे काम के माहौल का ताला, उचित सुरक्षा और आराम, उच्च मजदूरी, उपलब्ध वाष्पोत्सर्जन, आवास सुविधा आदि। इस शोध का मुख्य फोकस श्रमिक प्रवास पर सुरक्षा और आराम के प्रभाव की पहचान करना था। ऐसा करने के लिए कुछ विशेषज्ञों और माननीय थीसिस पर्यवेक्षक की मदद से सुरक्षा के लिए 09 (नौ) प्रश्न और आराम के लिए 13 (तेरह) प्रश्नों से युक्त एक अर्धसंरचित प्रश्नावली तैयार की गई थी। फिर विभिन्न 05 (पांच) परिधान कारखानों से 250 हितधारकों (प्रत्येक कारखाने से 50) पर एक सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण में अधिकांश भाग लेने वाले श्रमिक थे लेकिन प्रशासनिक कर्मी भी शामिल थे। कुल सर्वेक्षण शोधकर्ता द्वारा सीधे साक्षात्कार का उपयोग करके किया गया था। इस शोध से यह पाया गया कि यदि श्रमिकों को सम्मानजनक कार्य वातावरण के साथ–साथ उचित सुरक्षा और आराम मिले तो श्रम प्रवास को कम किया जा सकता है।

डॉ. नेट्टीकलप्पाकुम्मारा, डॉ. नाइक. के. कृष्णा (2020). लोगों का प्रवासन दुनियाभर में एक स्वीकृत घटना है जहां लोग भोजन, काम, सुरक्षा और आजीविका की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं जिसमें ऐतिहासिक रूप से वंचित समुदाय जैसे अनुसूचित जनजाति बड़े पैमाने पर प्रतिनिधित्व करते हैं। आदिवासी महिलाएं जिन्हें "संपत्ति" के रूप में जाना जाता है, झारखंड के आदिवासी समुदायों से पिछले कुछ दशकों से अकेले या समूहों में संबंधपरक आजीविका उद्देश्यों के लिए बड़ी संख्या में हैं। एक महिला को अपने परिवार का केंद्रक कहा जाता है और मानव समाज का आधा हिस्सा होता है जिसके बिना एक समाज अधूरा है और पुरुष और महिला दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए इंसान हैं यानी एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते हैं। फिर भी यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हर जगह महिला अधिकारों का उल्लंघन किया जाता है और जीवन के विभिन्न पहलुओं मे महिलाओं के साथ भेदभाव और दमन किया जा रहा है और लाखों महिलाएं यौन और शारीरिक

उत्पीड़न, दहेज हत्या और यातना, बलात्कार और सामूहिक बलात्कार, भ्रूण हत्या जैसी अनकही हिंसा और दुर्व्यवहार झेलती हैं। शिशु हत्या आदि और यह जारी है। वर्तमान अध्ययन आंध्र प्रदेश के अनंतपुरमू जिले में अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों पर प्रवास के प्रभाव पर केंद्रित है।

उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उददे्श्य उत्तराखण्ड़ राज्य के कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल में पलायन का आर्थिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

परिकल्पना

कुमाऊंव गढ़वाल के लोगों के मध्य पलायन करने के कारण आर्थिक स्तर पर प्रभाव का अध्ययन।

अनुसंधान क्रियाविधि

इस शोध पत्र में वर्णनात्मक तथा संख्यात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के उददे्श्यों को पूरा करने के लिए प्राथमिक आकड़ो का प्रयोग किया गया है। तथा प्राथमिक आकड़े राज्य के सभी जिलों से पलायन कर चुके लोगों से एकत्रित किये गए हैं तथा एकत्रित आकड़ों का विश्लेषण करके परिणाम ज्ञात किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र व आकड़े एकत्रिकरण

इस अध्ययन में उत्तराखण्ड़ राज्य के कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल के 13 जिलों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें से कुमाऊँ मण्ड़ल से 6 जिले नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथैरागढ़, उधम सिंह नगर, बागेश्वर व चम्पावत हैं तथा गढ़वाल मण्ड़ल से 7 जिले चमोली, उत्तरकाशी, देहरादून, पौढ़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, हरिद्वार व रुद्रप्रयाग जिला लिए गए हैं। तथा प्रतिदर्श प्रश्नावली के द्वारा उत्तराखण्ड़ राज्य के समस्त 13 जिलों से पलायन कर चुके 800 लोगों से संकलित किए गए है।

उपकरण

यह अध्ययन में विभिन्न सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके तैयार किया गया है तथा इस अध्ययन को करने में M.S WORD, M.S EXCEL, GOOGLE, TRANSLATOR व इत्यादि का प्रयोग किया गया है। तथा इस अध्ययन में विभिन्न सांख्यिकीय उपकरणों का भी प्रयोग किया गया है जिसमें प्रतिशत, औसत, व इत्यादि सांख्यिकीय उपकरण सम्मिलित किये गये हैं–

तलिका–1

प्रतिदर्श का जनसांख्किीय विवरण

विवरण	संख्या	प्रतिशत
कुमाऊँ	366	45.75
गढ़वाल	434	54.25
योग	800	100
पुरुष	478	59.75
महिला	322	40.25
योग	800	100

परिवारसहितपलायन	312	39
अकेलेपलायन	488	61
योग	800	100
विवाहित	466	58.25
अविवाहित	334	41.75
योग	800	100
30 वर्षतक	380	47.5
30वर्ष से 60 वर्षतक	332	41.5
60वर्ष से अधिक	88	11
योग	800	100
10जी	70	8.75
12जी	192	24
स्नातक	312	39
स्नातकोतर	226	28.25
योग	800	100
किसान	60	7.5
बेरोजगार	296	37
व्यापार	96	12
छात्र	94	11.75
सेवारत	240	30
सेवानिवृत	14	1.75
योग	800	100

उपरोक्त तालिका के अनुसार कुल 800 प्रतिदर्श में से उत्तराखण्ड़ राज्य के कुमाऊँ मण्ड़ल से 366 प्रतिवादि तथा गढ़वाल मण्ड़ल से 434 प्रतिवादियों से प्रतिदर्श एकत्र किये गये हैं तथा जिसमें पुरुष पलायन करने वाले प्रतिवादि 478 व 322 महिला प्रतिवादि शामिल हैं। पलायन करने वाले प्रतिवादि द्वारा 312 प्रतिवादियों ने परिवार सहित पलायन व 488 प्रतिवादियों ने अकेले ही पलायन किया है। जिसमें से 466 विवाहित प्रतिवादि व 334 प्रतिवादि अविवाहित है। तथा पलायन करने वाले लोगों में 30 आयुवर्ग तक के 380 प्रतिवादि, 30 से 60 आयुवर्ग तक के 332 प्रतिवादी व 60 से अधिक आयुवर्ग के 88 प्रतिवादी शामिल हैं। तथा जिनमें से 10th तक शिक्षा प्राप्त की है वह 70 प्रतिवादी, 12th तक शिक्षा प्राप्त करने वाले

192 प्रतिवादी, स्नातक तक शिक्षा प्राप्त करने वाले 312 प्रतिवादी, व स्नातकोतर तक शिक्षा प्राप्त करने वाले 226 प्रतिवादी हैं। जो सभी अलग–अलग प्रकार के कार्य करते हैं। जिनमें से 60 प्रतिवादी किसान, 296 प्रतिवादी बेरोजगार, 96 प्रतिवादी व्यापारी, 94 प्रतिवादी छात्र, 240 प्रतिवादी सेवारत व 14 प्रतिवादी सेवा निवृत हैं। जिनसे प्रतिदर्श एकत्र किये गये हैं।

तालिका–2

पलायनकर्ताओं का पलायन के कारण मण्ड़लों के अनुसार आर्थिक स्तर में प्रभाव का विवरण

विवरण	गढ़वाल	कुमाऊँ
पलायन के कारण आपके रोजगार पर कैसा प्रभाव पड़ता है	68.20	70.05
पलायन के कारण आपके स्वरोजगार पर प्रभाव पड़ता है	67.56	73.22
पलायन के कारण आपको बाजार से समान खरीदने में किस प्रकार का प्रभाव पड़ा	70.23	73.88
पलायन के कारण आपकी आय में परिवर्तन हुआ	67.47	69.29
पलायन के कारण आपकी बचत में वृद्धि हुई	64.88	65.68
पलायन के कारण आपके पारवारिक आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई	68.76	71.48
पलायन के कारण आपको मिलने वाली ऑनलाईन ऑफलाईन बैकिंग सेवाएं प्रभावित हुई	68.94	73.88
औसत	68.01	71.07

स्रोत : प्राथमिक आकड़े (N = 800)

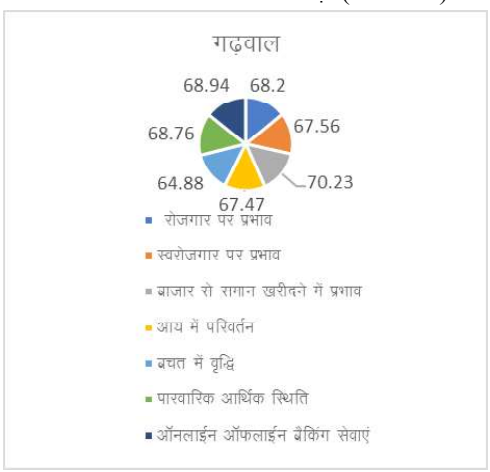

उपरोक्त तालिका 4.49 के अनुसार कुमाऊँ मण्ड़ल से लगभग 73 प्रतिशत प्रतिवादियों का व गढ़वाल मण्ड़ल से लगभग 68 प्रतिशत प्रतिवादियों का मानना है पलायन के कारण उनके स्वरोजगार पर प्रभाव पड़ा है। लगभग 74 प्रतिशत कुमाऊँ मण्ड़ल के लोगों का व लगभग 70 प्रतिशत गढ़वाल मण्ड़ल के लोगों का मानना है पलायन के कारण बाजार से सामान खरीदन`में प्रभाव पड़ा है। जबकी पलायन के कारण कुमाऊँ मण्ड़ल से लगभग 69 प्रतिशतव गढ़वाल मण्ड़ल से लगभग 67 प्रतिशत लोगों की आय में परिवर्तन हुआ। तथा साथ ही साथ कुमाऊँ के लोगों का लगभग 67 प्रतिशतव गढ़वाल मण्ड़ल से लगभग 65 प्रतिशत लोगों को पलायन के कारण बचत में वृद्धि हुई है। पलायन के कारण कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल के लोगों का लगभग 71 प्रतिशत व लगभग 69 प्रतिशत लोगों के पारवारिक व आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई है। तथा कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल के लोगों को पलायन के कारण मिलने वाली ऑनलाईन व ऑफलाईन सेवाएं 74 प्रतिशत व लगभग 69 प्रतिशत प्रभावित हुई हैं। निम्न तालिका के अनुसार स्पष्ट होता है कि कुमाऊँ मण्ड़ल व गढ़वाल मण्ड़ल में पलायन के कारण लगभग समान हैं। तथा कुल तालिका के औसत के माध्यम से देखा जाए तो कुमाऊँ का 3 प्रतिशत औसत गढ़वाल मण्ड़ल से अधिक है। अर्थात पलायन के कारण लोगों की आर्थिक स्थिति में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है और गढ़वाल मंडल की तुलना में कुमाऊँ मंडल की आर्थिक स्थिति पलायन के कारण अधिक सकारात्मक प्रभावित हुई है।

परिकल्पना

कुमाऊँ व गढ़वाल के लोगों के मध्य पलायन के कारण आर्थिक स्तर में एक महत्वपूर्ण संबंध है।

तालिका–3

कुमाऊंव गढ़वाल के लोगों के मध्य पलायन के कारण आर्थिक स्तर में सम्बध का विवरण

Anova: Single Factor						
SUMMARY						
Groups	*Count*	*Sum*	*Average*	*Variance*		
Column 1	7	476.04	68.00571	2.780462		
Column 2	7	497.48	71.06857	8.973948		
ANOVA						
Source of Variation	*SS*	*Df*	*MS*	*F*	*P-value*	*F crit*
Between Groups	32.83383	1	32.83383	5.58664	0.035816	4.747225
Within Groups	70.52646	12	5.877205			
Total	103.3603	13				

उपरोक्त तालिका 4.50 के अनुसार एनोवा सिंगल फैक्टर टेस्ट का परिणाम है जिससे यह ज्ञात होता है कि P-0.035816 (value 0.05 > p-value 0.035816) से छोटी है अर्थात कुमाऊँ व गढ़वाल के लोगों के मध्य पलायन के कारण आर्थिक स्तर में एक महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। कुमाऊँ व गढ़वाल के लोगों में पलायन के कारण आर्थिक स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। परन्तु गढ़वाल

मंडल की तुलना में कुमाऊं क्षेत्र के लोगों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण कुमाऊँ क्षेत्र के लोगों पर पलायन के कारण अधिक सकारात्मक प्रभाव आए हैं। जिस कारण कुमाऊँ व गढ़वाल मंडल के लोगों में पलायन के कारण संबंध नहीं पाये गए हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उत्तराखण्ड़ राज्य के कुमाऊँव गढ़वाल मण्ड़ल में पलायन के कारणों का अध्ययन करना है। तथा अध्ययन को पूर्ण करने के लिए प्रतिदर्श का एकत्रीकरण प्रश्नावली के द्वारा उत्तराखण्ड़ राज्य के कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल के समस्त जिलों से पलायन कर चुके 800 लोगों से संकलित किये गये हैं। तथा अध्ययन को पूरा करने के लिए विभिन्न सॉफटवेयर व उपकरणों को मिलाकर किया गया है। तथा सभी जिलों से एकत्र किए गए प्रतिदर्शों के माध्यम से निष्कर्ष ज्ञात किया गया है। कि उत्तराखण्ड़ राज्य की सबसे बड़ी समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं का अभाव है। इसी कारणवश राज्य के लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरण होते रहते हैं। तथा कुमाऊँ मण्ड़ल से लगभग 73 प्रतिशत प्रतिवादियों का व गढ़वाल मण्ड़ल से लगभग 68 प्रतिशत प्रतिवादियों का मानना है पलायन के कारण उनके स्वरोजगार पर प्रभाव पड़ा है। लगभग 74 प्रतिशत कुमाऊँ मण्ड़ल के लोगों का व लगभग 70 प्रतिशत गढ़वाल मण्ड़ल के लोगों का मानना है पलायन के कारण बाजार से सामान खरीदने में प्रभाव पड़ा है। जबकी पलायन के कारण कुमाऊँ मण्ड़ल से लगभग 69 प्रतिशत व गढ़वाल मण्ड़ल से लगभग 67 प्रतिशत लोगों की आय में परिवर्तन हुआ। तथा साथ ही साथ कुमाऊँ के लोगों का लगभग 67 प्रतिशतव गढ़वाल मण्ड़ल से लगभग 65 प्रतिशत लोगों को पलायन के कारण बचत में वृद्धि हुई है। पलायन के कारण कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल के लोगों का लगभग 71 प्रतिशत व लगभग 69 प्रतिशत लोगों के पारवारिक व आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई है। तथा कुमाऊँ व गढ़वाल मण्ड़ल के लोगों को पलायन के कारण मिलने वाली ऑनलाईन व ऑफलाईन सेवाएं 74 प्रतिशत व लगभग 69 प्रतिशत प्रभावित हुई हैं। अर्थात कुमाऊँ मण्ड़ल व गढ़वाल मण्ड़ल में पलायन के कारण लगभग समान हैं। दोनों ही मण्ड़लों में आर्थिक स्तर के साधनों का अभाव है।

सुझाव

पलायन करने का मुख्य कारण ग्रामीण लोगों को गांव में रोजगार प्राप्त न होना है यदि गांव में ही रोजगार की सुविधाएं उपलब्ध सुगमता से हो जाए तो पलायन की समस्या का समाधान बहुत हद तक कम हो सकता है। पलायन के कारण वीरान होते गांवो को बचाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में ही रोजगार उपलबध करना आवश्यक है तभी पलायन को कम किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. Roy, Dr. Choudhury Sayantani., Suranjana, Ms. Joarder. (2020). Reverse Migration Due to Long Lockdown in India- Is it Sustainable? *International Journal of Engineering and Management Research*. vol. 10. Pg. **139-144.**
2- Doliñska, A., Joñczy, R., Poskart, Rokita D. (2020). Post-Secondary-School Migration of Young People to Large Regional Centres as a Factor of Depopulation

and Disharmonious Regional Development in Poland. *European Research Research Studies Journal.* Vol. XXIII. Pg. **260-279.**

3. Ali, Basarat Md. (2020). Study on Labor migration in Apparel industry. *American Journal of Engineering (AJER)*. Vol. 9. Pg. **83-88.**
4. Kummara, Dr. Nettikallappa., Krishna, Dr Naik.K. (2020). Impact of Migration of Socio-economic Conditions of Scheduled tribe Women in Anantapuramu District: An Empirical Evidence. *International Journal of Multidisciplinary Research Review*. Vol.6. December.